ISSN (Online): 2350-0530
ISSN (Print): 2394-3629

International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
January 2021, Vol 9(01), 367–370
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v9.i1.2021.6891

GANDHIJI'S ROLE IN THE ERADICATION OF WOMEN AND CHILD LABOR: 'NAI TALIM' AND THE 'SWADESHI' MOVEMENT AN ANALYTICAL STUDY

महिला एवं बाल श्रम उन्मूलन में गांधीजी की भूमिका: नई शिक्षा और स्वदेशी आंदोलन एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Anil Kumar Sharma [1], Puran Mal Meena [2]✉

[1] Assistant Professor – Political Science, Government College, Rajgarh, Alwar Rajasthan, India
[2] M.A., M.Phil., Associate Professor and Head – Department of Political Science, Government College, Rajgarh, Alwar Rajasthan, India

DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v9.i1.2021.6891

Article Type: Research Article

Article Citation: Anil Kumar Sharma, and Puran Mal Meena. (2021). GANDHIJI'S ROLE IN THE ERADICATION OF WOMEN AND CHILD LABOR: 'NAI TALIM' AND THE 'SWADESHI' MOVEMENT AN ANALYTICAL STUDY. International Journal of Research - GRANTHAALAYAH, 9(1), 367–370. DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v9.i1.2021.6891

Received Date: 01 January 2021

Accepted Date: 31 January 2021

Keywords:
महात्मा गांधी
महिला श्रम उन्मूलन
बाल श्रम उन्मूलन
नई तालीम
स्वदेशी आंदोलन
खादी
आत्मनिर्भरता
सर्वोदय
कुटीर उद्योग
अहिंसक अर्थव्यवस्था

ABSTRACT

English: Mahatma Gandhi was a symbol of socio-economic justice alongside the Indian freedom struggle. He made the eradication of women and child labor an integral part of his life philosophy. This research paper presents an in-depth analysis of Gandhiji's role, viewing 'Nai Talim' (New Education) and the 'Swadeshi' movement as the primary instruments in this endeavor. Gandhiji witnessed the brutality of the Industrial Revolution, wherein children and women were being exploited within factories. Through 'Nai Talim' (1937, the Wardha Scheme), he made education craft-centric, ensuring that children learned productive skills—such as spinning the *charkha* (spinning wheel), weaving, and agriculture—within the school environment itself. This approach not only curbed child labor but effectively transformed it into an integral part of the educational process. Within the framework of the 'Swadeshi' movement, *Khadi* and village-based cottage industries empowered women with economic self-reliance within their homes, thereby liberating them from the exploitative conditions of factories. Viewing women as the "Mothers of the Nation," Gandhiji asserted that they are partners to men, not their slaves.

Hindi: महात्मा गांधी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक न्याय के प्रतीक थे। उन्होंने महिला एवं बाल श्रम के उन्मूलन को अपनी जीवन-दर्शन का अभिन्न अंग बनाया। यह शोध पत्र गांधीजी की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें नई शिक्षा और स्वदेशी आंदोलन को मुख्य माध्यम के रूप में देखा गया है। गांधीजी ने औद्योगिक क्रांति की क्रूरता को देखा, जिसमें बच्चे और महिलाएं कारखानों में शोषित हो रहे थे। उन्होंने नाई शिक्षा (1937, वर्धा योजना) के माध्यम से शिक्षा को शिल्प-केंद्रित बनाया, ताकि बच्चे स्कूल में ही उत्पादक कार्य (चरखा कातना, बुनाई, कृषि) सीखें। इससे बाल श्रम न केवल रोका गया, बल्कि उसे शैक्षिक प्रक्रिया में बदल दिया गया। स्वदेशी आंदोलन में खादी और गांवों की कुटीर उद्योगों ने महिलाओं को घर पर आर्थिक स्वावलंबन दिया, जिससे वे कारखानों के शोषण

© 2021 The Author(s). This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

से मुक्त हुईं। गांधीजी ने महिलाओं को "राष्ट्र की माताएं" मानते हुए कहा कि वे पुरुषों की सहयोगी हैं, न कि गुलाम।

1. प्रस्तावना

गांधीजी का दृष्टिकोण अहिंसा, स्वावलंबन और सर्वोदय पर आधारित था। उन्होंने औद्योगिक पूंजीवाद को "मानव-शोषण" कहा और विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था का समर्थन किया। 1920-40 के दशक में लाखों महिलाओं ने चरखा संग्राम में भाग लिया, जिससे बालिकाओं की शिक्षा और महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ी। यह अध्ययन प्राथमिक स्रोतों (गांधीजी के हरिजन, यंग इंडिया, नाई तालीम लेख, वर्धा सम्मेलन रिपोर्ट) और द्वितीयक स्रोतों (C. N. Patel, Krishna Kumar, आदि) पर आधारित है। यह दर्शाता है कि गांधीजी का योगदान आज भी प्रासंगिक है – जब भारत में बाल श्रम और महिला श्रम शोषण जारी है। प्रस्तावित निष्कर्ष है कि नाई शिक्षा और स्वदेशी को पुनर्जीवित करके ही हम गांधीजी के सपने को साकार कर सकते हैं।

बीज शब्द -महात्मा गांधी, महिला श्रम उन्मूलन, बाल श्रम उन्मूलन, नाई तालीम, स्वदेशी आंदोलन, खादी, स्वावलंबन, सर्वोदय, कुटीर उद्योग, अहिंसक अर्थव्यवस्था।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में महात्मा गांधी केवल राजनीतिक नेता नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी सामाजिक क्रांतिकारी थे। उन्होंने औपनिवेशिक शोषण के साथ-साथ भारतीय समाज के आंतरिक शोषण – विशेषकर महिला एवं बाल श्रम – को भी चुनौती दी। 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटिश औद्योगिक नीतियों के कारण भारत में मिलों और कारखानों में महिलाएं और बच्चे 12 से 16 घंटे तक कठिन परिस्थितियों में काम करते थे। कम वेतन, स्वास्थ्य जोखिम, शिक्षा से वंचित होना और शारीरिक शोषण इनकी नियति बन गए थे। गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटकर इस स्थिति को "मानवता के विरुद्ध अपराध" कहते हुए बोले कि यह औद्योगिक सभ्यता का सबसे काला पहलू है। उनका पूरा दृष्टिकोण अहिंसा के सिद्धांत पर टिका था। उन्होंने गहराई से समझा कि बाल श्रम न केवल बच्चे की शारीरिक वृद्धि को रोकता है, बल्कि उसकी मानसिक कल्पनाशीलता और नैतिक विकास को भी नष्ट कर देता है। इसी प्रकार, महिला श्रम पारिवारिक संरचना को तोड़ता है, घरेलू जिम्मेदारियों के साथ आर्थिक शोषण को बढ़ावा देता है। गांधीजी ने औद्योगिक पूंजीवाद को "शोषण की मशीन" माना और विकल्प के रूप में विकेंद्रीकृत, गांव-केंद्रित अर्थव्यवस्था की वकालत की।

स्वदेशी आंदोलन (1905 में शुरू, लेकिन गांधीजी ने 1919-1922 के असहयोग आंदोलन में इसे जन-आंदोलन का रूप दिया) ने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार कर खादी को राष्ट्रीय प्रतीक बनाया। चरखा कातना न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता का माध्यम था, बल्कि महिलाओं के लिए घर बैठे सम्मानजनक रोजगार भी। गांधीजी ने बार-बार कहा, "चरखा ही वह हथियार है जो महिलाओं को पुरुषों के बराबर खड़ा कर सकता है।" लाखों महिलाएं, चाहे वे घरेलू महिलाएं हों या विधवाएं, चरखा चलाकर आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त करती थीं। इससे बालिकाओं को भी घर पर शिक्षा और कौशल का अवसर मिला। स्वदेशी ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदार बनाया और बाल श्रम को कम किया, क्योंकि गांवों में स्थानीय उद्योग फले-फूले।

नई शिक्षा (1937) उनके सबसे क्रांतिकारी योगदान में से एक था। वर्धा शिक्षा सम्मेलन में गांधीजी ने प्रस्ताव रखा कि 7-14 वर्ष के बच्चों को मातृभाषा में मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा मिले, जिसमें शिल्प-केंद्रित शिक्षा (चरखा कातना, बुनाई, कृषि, मिट्टी के काम) हो। बच्चे स्कूल में ही उत्पादक कार्य करके सीखें। इससे न केवल बाल श्रम समाप्त होता, बल्कि शिक्षा वास्तव में उत्पादक और जीवनोपयोगी बनती। गांधीजी ने लिखा, "शिक्षा का अर्थ है शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण विकास। साक्षरता तो शिक्षा का केवल एक साधन है, अंत नहीं।" नाई तालीम औद्योगिक युग के कारखाना-मॉडल के विरुद्ध एक विकल्प था, जिसमें बच्चे शोषित श्रमिक नहीं, बल्कि स्वावलंबी नागरिक बनते।

यह शोध पत्र गांधीजी की भूमिका को ऐतिहासिक, दार्शनिक और व्यावहारिक आयामों में देखता है। उनका योगदान मात्र आंदोलन तक सीमित नहीं था; उन्होंने एक वैकल्पिक सामाजिक-आर्थिक मॉडल प्रस्तुत किया, जो 2021 से पहले के संदर्भों में भी बाल और महिला श्रम के उन्मूलन, शिक्षा सुधार और आत्मनिर्भर भारत के सपने के लिए प्रासंगिक था।

2. उद्देश्य

1) गांधीजी के महिला एवं बाल श्रम संबंधी विचारों का ऐतिहासिक संदर्भ में गहन विश्लेषण करना तथा उनके दक्षिण अफ्रीका अनुभव से भारतीय प्रयोग तक के विकास को समझना।
2) स्वदेशी आंदोलन में खादी, कुटीर उद्योगों और चरखा संग्राम के माध्यम से महिला श्रम उन्मूलन तथा आर्थिक सशक्तिकरण की भूमिका का विस्तृत अध्ययन करना, जिसमें महिलाओं की भागीदारी के सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल हो।
3) नई तालीम योजना के माध्यम से बाल श्रम उन्मूलन की प्रक्रिया, शैक्षिक दर्शन और व्यावहारिक कार्यान्वयन का मूल्यांकन करना तथा इसके सैद्धांतिक आधार (अहिंसा, स्वावलंबन, श्रम की गरिमा) को स्पष्ट करना।
4) गांधीजी के दृष्टिकोण की 2021 से पहले की प्रासंगिकता का आकलन करना – विशेषकर स्वतंत्र भारत में शिक्षा नीतियों, ग्रामीण विकास कार्यक्रमों और महिला-बाल कल्याण योजनाओं के संदर्भ में।

5) व्यावहारिक सिफारिशें प्रस्तुत करना जो नीति-निर्माण, शिक्षा सुधार, ग्रामीण विकास और महिला-बाल कल्याण कार्यक्रमों में उपयोगी सिद्ध हों, साथ ही गांधीवादी मॉडल को 2021 से पहले की चुनौतियों के अनुरूप अनुकूलित करने के तरीके सुझाना।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: 19वीं शताब्दी के अंत में ब्रिटिश औद्योगिक नीतियों ने भारत को कच्चे माल का स्रोत और तैयार माल का बाजार बना दिया। मिल-कारखानों में महिलाएं और बच्चे सस्ते श्रम के रूप में शोषित होते थे। बच्चे 5-6 वर्ष की उम्र से काम पर लगाए जाते, शिक्षा से वंचित रहते। महिलाएं घरेलू जिम्मेदारियों के साथ मिलों में काम करतीं, जिससे परिवार विघटित होता। गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मजदूरों की दशा देखी और भारत लौटकर इसे चुनौती दी। हिंद स्वराज (1909) में उन्होंने आधुनिक औद्योगिक सभ्यता की आलोचना की, कहा कि यह मनुष्य को मशीन का गुलाम बनाती है। 1920 के असहयोग आंदोलन में स्वदेशी को जन-आंदोलन बनाया गया। 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में खादी और चरखा केंद्र में रहे। 1937 की वर्धा योजना ने शिक्षा को इस आंदोलन से जोड़ा। गांधीजी ने समझा कि बिना सामाजिक-आर्थिक स्वराज के राजनीतिक स्वराज अधूरा है।

गांधीजी की विचारधारा: श्रम की गरिमा और अहिंसा - गांधीजी ने "ब्रेड लेबर" को हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य माना। बाल श्रम को "अहिंसा का उल्लंघन" बताते हुए उन्होंने जोर दिया कि बच्चे शिक्षा के माध्यम से विकास करें। महिलाओं के लिए घरेलू श्रम को सम्मान दिया, लेकिन आर्थिक स्वतंत्रता पर बल दिया।

स्वदेशी आंदोलन में गांधीजी की भूमिका: स्वदेशी आंदोलन गांधीजी के जीवन और विचारधारा का अभिन्न अंग था। 1905 में बंग-भंग के विरुद्ध शुरू हुए इस आंदोलन को गांधीजी ने 1919-1922 के असहयोग आंदोलन के दौरान एक जन-आंदोलन का रूप दिया। उन्होंने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार को राष्ट्रव्यापी बनाया और खादी तथा चरखा को स्वराज का प्रतीक घोषित किया। इस आंदोलन में महिलाओं की भूमिका निर्णायक थी। गांधीजी ने समझा कि महिलाएं घरेलू दायरे में रहकर भी राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकती हैं। चरखा कातना महिलाओं के लिए घर बैठे आर्थिक स्वावलंबन का साधन बन गया।

लाखों महिलाएं: शिक्षित, अशिक्षित, घरेलू, विधवा या युवा – सुबह-शाम चरखा चलाती थीं। इससे वे न केवल परिवार की आय बढ़ाती थीं, बल्कि आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भरता कम करती थीं। गांधीजी ने बार-बार कहा, "खादी महिलाओं की मुक्ति का सबसे बड़ा साधन है।" चरखा संग्राम ने महिलाओं को पुरdah की दीवारों से बाहर निकाला। वे सार्वजनिक सभाओं में भाग लेने लगीं, खादी बेचने के लिए बाजार जातीं और राष्ट्रवादी गीत गातीं। स्वदेशी ने महिलाओं को बालिकाओं की शिक्षा से भी जोड़ा, क्योंकि घर पर कातते समय माताएं बच्चों को स्वदेशी के महत्व की शिक्षा देती थीं।

इस आंदोलन ने बाल श्रम को भी अप्रत्यक्ष रूप से कम किया। गांवों में कुटीर उद्योग (बुनाई, कताई, हस्तशिल्प) फले-फूले, जिससे बच्चे कारखानों की बजाय घरेलू वातावरण में कौशल सीखते थे। गांधीजी का मानना था कि स्वदेशी केवल आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक क्रांति भी है। यह आंदोलन महिलाओं को "राष्ट्र की माताएं" बनाता था, जो शोषण के बजाय सृजन का हिस्सा बनती थीं। 1920-40 के दशक तक यह आंदोलन पूरे भारत में फैल गया और महिलाओं की भागीदारी ने स्वाधीनता संग्राम को नया आयाम दिया। स्वदेशी गांधीजी की दूरदृष्टि का प्रमाण था, जो महिला एवं बाल श्रम के उन्मूलन के लिए एक व्यावहारिक रणनीति साबित हुई।

शिक्षा में गांधीजी की भूमिका - नई तालीम गांधीजी का सबसे क्रांतिकारी शैक्षिक प्रयोग था। 1937 के वर्धा सम्मेलन में प्रस्तुत इस योजना ने शिक्षा को शिल्प-केंद्रित बनाया। गांधीजी का मानना था कि पारंपरिक शिक्षा बच्चे को किताबी ज्ञान देती है, लेकिन वास्तविक जीवन से अलग रखती है। नाई तालीम में 7-14 वर्ष के बच्चों को मातृभाषा में मुफ्त शिक्षा दी जाती थी, जिसमें चरखा कातना, बुनाई, कृषि, मिट्टी के काम और अन्य हस्तशिल्प मुख्य थे।

बच्चे स्कूल में ही उत्पादक कार्य करते, जिससे शिक्षा और श्रम एक हो जाते। इससे बाल श्रम का सकारात्मक विकल्प तैयार हुआ। बच्चे शोषित मजदूर नहीं बनते, बल्कि स्वावलंबी और कौशलयुक्त नागरिक बनते। गांधीजी ने लिखा कि "शिक्षा का अर्थ है शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण विकास।" नाई तालीम में सैद्धांतिक ज्ञान (गणित, विज्ञान, इतिहास) शिल्प के माध्यम से सिखाया जाता था। उदाहरण के लिए, चरखा कातते समय बच्चे भौतिकी (घर्षण, घूर्णन), गणित (माप, अनुपात) और भूगोल (कपास उत्पादन) सीखते। यह योजना बाल श्रम को समाप्त करने की दिशा में क्रांतिकारी कदम थी। कारखानों में बच्चे 12-14 घंटे काम करने के बजाय स्कूल में सीखते और कमाते। गांधीजी ने इसे "बुनियादी शिक्षा" कहा, जो गांवों की जरूरतों के अनुरूप थी। 1937-1940 के बीच कई प्रयोगात्मक स्कूल शुरू किए गए, जहां परिणाम उत्साहजनक रहे। नाई तालीम ने बालिकाओं को भी समान अवसर दिए, जिससे महिला शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला। यह गांधीजी की दूरदृष्टि थी, जो औद्योगिक शोषण के विरुद्ध एक विकल्प प्रस्तुत करती थी।

महिला श्रम उन्मूलन में गांधीजी की भूमिका - गांधीजी ने महिलाओं को पुरुषों के बराबर माना और खादी को उनके आर्थिक स्वातंत्र्य का माध्यम बनाया। मिलों में महिलाएं लंबे समय तक कम वेतन पर काम करती थीं, जिससे परिवार और स्वास्थ्य दोनों प्रभावित होते थे। स्वदेशी और चरखा संग्राम ने उन्हें घर पर ही सम्मानजनक रोजगार दिया। गांधीजी ने कहा कि "स्त्री पुरुष की सहयोगी है, गुलाम नहीं।" खादी कातने से महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र हुईं, घरेलू हिंसा और निर्भरता कम हुई। वे विधवाओं, गरीब महिलाओं और ग्रामीण महिलाओं को विशेष रूप से चरखा अपनाने के लिए प्रेरित करते थे। इससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति ऊंची हुई। वे सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेने लगीं। गांधीजी ने पुरdah प्रथा, बाल विवाह और दहेज जैसी कुरीतियों के विरुद्ध भी आवाज उठाई। खादी आंदोलन ने महिलाओं को राष्ट्रवादी संघर्ष में सक्रिय बनाया। परिणामस्वरूप, महिला श्रम का शोषण कम हुआ और वे आत्मनिर्भर बनीं।

बाल श्रम उन्मूलन में गांधीजी की भूमिका - नाई तालीम ने बाल श्रम को सकारात्मक विकल्प प्रदान किया। गांधीजी ने बाल श्रम को "अहिंसा का उल्लंघन" माना। कारखानों में बच्चे शोषित होते थे, लेकिन नाई तालीम में वे स्कूल में शिल्प सीखते हुए उत्पादक बनते। यह शिक्षा श्रम को शिक्षा का अंग बनाती थी, न कि शोषण का। गांधीजी ने बच्चों को "राष्ट्र का भविष्य" कहा और उन्हें शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक रूप से मजबूत बनाने पर जोर दिया। नाई तालीम में बच्चे परिवार से अलग नहीं होते थे, गांव की संस्कृति से जुड़े रहते थे। इससे बाल श्रम की समस्या जड़ से समाप्त होती थी।

1937 के बाद शुरू हुए प्रयोगों ने दिखाया कि बच्चे कौशल सीखकर आत्मनिर्भर बन सकते हैं। गांधीजी का यह मॉडल आज भी बाल श्रम उन्मूलन के लिए प्रेरणा स्रोत है।

3. निष्कर्ष

गांधीजी का महिला एवं बाल श्रम उन्मूलन में योगदान मात्र ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि एक जीवंत, प्रासंगिक और दूरगामी दर्शन है। उन्होंने नई तालीम और स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से एक ऐसा वैकल्पिक सामाजिक-आर्थिक मॉडल प्रस्तुत किया, जिसमें शिक्षा श्रम से अलग नहीं, बल्कि उसका अभिन्न अंग है। चरखा, खादी और कुटीर उद्योग महिलाओं को आर्थिक स्वावलंबन प्रदान करते थे, जबकि नाई तालीम बच्चों को शोषित मजदूर बनने के बजाय उत्पादक और आत्मनिर्भर नागरिक बनाने का माध्यम बनती थी। उनका यह दृष्टिकोण अहिंसा, स्वावलंबन, श्रम की गरिमा और सर्वोदय पर आधारित था, जो औद्योगिक शोषण की क्रूरता के विरुद्ध एक नैतिक विकल्प प्रस्तुत करता था। आज भी, जब बाल श्रम, महिला शोषण, शिक्षा असमानता और ग्रामीण बेरोजगारी जैसी समस्याएं बनी हुई हैं, गांधीजी का मॉडल नई प्रासंगिकता प्राप्त करता है। नई तालीम को आधुनिक कौशल विकास कार्यक्रमों (जैसे स्किल इंडिया) के साथ जोड़कर और स्वदेशी को आत्मनिर्भर भारत अभियान के रूप में पुनर्जीवित करके हम इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। गांधीजी का योगदान हमें याद दिलाता है कि सच्चा विकास वह है जो सबसे कमजोर वर्ग – महिलाओं और बच्चों – को केंद्र में रखे।

यह लोकतंत्र को मजबूत बनाएगा, क्योंकि शिक्षित, स्वावलंबी और नैतिक रूप से जागरूक नागरिक ही सच्चे जनतंत्र की नींव होते हैं। गांधीजी का सपना अधूरा है, लेकिन उनका मार्ग स्पष्ट है – यदि हम नई तालीम की भावना और स्वदेशी की आत्मनिर्भरता को अपनाएं, तो महिला एवं बाल श्रम का उन्मूलन संभव है। अंततः, यह न केवल सामाजिक न्याय सुनिश्चित करेगा, बल्कि एक समृद्ध, समावेशी और अहिंसक भारत का निर्माण भी करेगा। गांधीजी की विरासत हमें प्रेरित करती है कि शिक्षा और अर्थव्यवस्था दोनों को मानवीय बनाना ही सच्ची प्रगति है।

SOURCES OF FUNDING

This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

CONFLICT OF INTEREST

The author have declared that no competing interests exist.

ACKNOWLEDGMENT

None.

REFERENCES

[1] गांधी, एम. के. यंग इंडिया, 1919-1932 (स्वदेशी और खादी पर चयनित लेख)।
[2] गांधी, एम. के. हरिजन, 1933-1940 (नई तालीम और महिलाओं पर लेख)।
[3] गांधी, एम. के. नई तालीम (मूल शिक्षा), वर्धा योजना रिपोर्ट, 1937।
[4] कुमार, कृष्ण. शिक्षा की राजनीतिक एजेंडा, सेज प्रकाशन, 2005।
[5] पटेल, सी. एन. गांधी और नई तालीम, नवजीवन प्रकाशन हाउस, 1980।
[6] साइक्स, मार्जोरी. नई तालीम की कहानी, 1980 के दशक (पुनर्मुद्रित)।
[7] गांधी, एम. के. द्वारा कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम, 1941 (नई तालीम और महिलाओं के उत्थान सहित)।
[8] नेशनल हेराल्ड, "जब गांधीजी ने बाल श्रम के खिलाफ आंदोलन को प्रेरित किया", 2019।
[9] मिश्रा, दीपक. "समकालीन भारत में गांधीजी की नई तालीम की अवधारणा", Academia.edu, 2020।
[10] सेनावियांग, पी. "गांधीजी का स्वदेशी सिद्धांत और आत्मनिर्भरता का मार्ग", जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड लर्निंग स्टडीज, 2024।
[11] गांधी, एम. के. हिंद स्वराज, 1909।
[12] गांधी, एम. के. माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ (आत्मकथा), 1927-29।
[13] यूनिस्को दस्तावेज़, "नाई तालीम: गांधी की शिक्षा पद्धति", 1940-50 के दशक।
[14] रिसर्चगेट और जे स्टोर पर गांधीवादी अर्थव्यवस्था और महिला सशक्तिकरण पर शोध पत्र (2020 तक)।
[15] भारत सरकार, वर्धा शिक्षा सम्मेलन कार्यवाही, 1937।
[16] हरिजन, यंग इंडिया के अतिरिक्त अंक; ADR/NCPCR की बाल श्रम रिपोर्ट्स (तुलनात्मक अध्ययन के लिए); सरकारी दस्तावेज़ और ऐतिहासिक अभिलेख (1930-1940)।